“ कोई अन्दर से धोय डारै, तौ जानी ”

“ जीव ” बेचारा भटक रहा है,

मत, पंथों और नामों में ।

सत्य वस्तु का भेद गुप्त है,

सभी जीव हैं राहों में।।

कहाँ चले तुम, किसे खोजने,

राम, नाम के मतवाले।

हाथ, सुमिरनी लिये कमंडल,

पीताम्बर सर पर डाले।।

सभी कामना, वासना,

कई तरह के पाप।

अज्ञान, अविद्या, विमुख मन,

मानस रोग हैं ताप।।

चार चतुष्ठय स्वच्छ हो,

मानस रोग और ताप।

मन, सन्मुख हो आत्म के,

मन पूरण हो आप।।

सद्गुरु का उपदेश गहि,

मन पूरण करि लेव।

पूरण मन से सब मिले,

दाता होकर देव।।

सभी देवता मन के अन्दर,

तीन देव हैं अन्दर में।

अन्दर, बाहर सत्य न मिलता,

मत भटको तुम अन्दर में।।

पहले सद्गुरु खोजकर,

सन्मुख, मन करि लेव।

मन पूरण, निर्मल हुआ,

घर बैठे सब लेव।।

अन्दर परिवर्तन सभी हो,

कायाकल्प हो आप।

मन बुद्धि, चित्त बदले तुरत,

मानस रोग और ताप।।

• अध्यात्म की चींटी, मकड़ी, बन्दर और विहंगम चालें :-

चाल चार हैं जान लो,
यही अध्यात्म की चाल।
चींटी, मकड़ी बाह्य है,
अन्दर बन्दर चाल।।

अन्दर, बाहर जो नही,

वही विहंगम चाल।

सीधे पहुँचो लक्ष्य पर,

यह सद्गुरु की चाल।।

1. मन में परिवर्तन :-

(I) पशुता जाय, मनुष्यता आवे,

मन पूरण तब मनुज कहावै।।

(II) मन कौवा से हंस होय जावे,

सार वस्तु तब ही गहि पावै।।

(III) गति अकर्म, मन की होय जावे,

सहज अवस्था खुद ही आवै।।

(IV) समदृष्टा, समस्थित पावै,

मन की गति, अचल हो जावै।।

(V) खाली हाथ न कोई जावै,

दाता मन खुद ही बनि जावै।।

(VI) विनयी भाव और मोहक वाणी,

मधुर स्वभाव, विराट निशानी।।

(VII) सबको पढ़े, निस्वार्थ हो सेवा,

सबसे जुड़े, अचिन्त न भेवा ।।

(VIII) नेतृत्व सभी का मन करै,

सही मार्ग दे खोज।

इन्द्रिय, मन और सुरत की,

एकात्म अवस्था रोज।।

(IX) अपना तुरत बनाय ले,

माया से रहे पार।

केवल सत्य लखाय दे,

जो सबका है सार।।

(X) केवल मन को साधकर,

पूर्ण करो सब काम।

पीछे - पीछे हरि फिरै,

स्वयं मिले सतनाम।।

2. बुद्धि, चित्त, अहंकार में परिवर्तन:-

प्रज्ञा, बुद्धि, विवेक होय जावै,

निर्मल चित्त शून्य होय जावै।

अहंकार पल मे मिटि जावै,

भाव, विचार न कुछ भी आवै।।

3. मानस रोगों में परिवर्तन:-

केवल मन सन्मुख किये,
बदले मानस रोग।
मन पूरण, निर्मल हुआ,
कोई न व्यापे रोग।।

काम बदलता नाम में,
क्रोध, दया होय जाय।
लोभ बदलता दान में,
मोह, प्रेम होय जाय।।

अहंकार हो नम्रता,

मद, होय जाय नम्र।

मत्सर सेवा भाव में,

विनयी भाव विनम्र।।

4. तीन तापों का असर मन पर नहीं:-

तीन ताप का असर नहिं,
राम राज्य होय जाय।
मन में कुछ व्यापै नहीं,
सबै नष्ट होय जाय।।

5.“ जीव ” में परिवर्तन :-

जीव बदल आतम हुआ,
छुद्र से हुआ विराट।
व्यापक हुआ जगत में,
मोक्ष, मुक्ति सब पास।।

आतमघट परगट हुआ,
धार लखै खुद जीव।
कुछ भी करना बचा नहि,
जीव हो गया पीव।।

सुरेशा दयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क सूत्र - (9984257903)